

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०४/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी अपना मूलस्वरूप स्पष्टता से देखें... चमकता हुआ सितारा ब्रेन के अंदर हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में अपने सिंहासन पर विराजमान है... सभी देखें अपना मूलस्वरूप.. अपने मूलस्वरूप की लाइट को स्पष्टता से देखने का अभ्यास करें... अगले २० सेकंड के लिए सभी अपना मूलस्वरूप स्पष्टता से देखें और उसका अनुभव करें...

सभी ने अपना मूलस्वरूप देखा? क्या उसका अनुभव किया? जब-जब संसार के कर्मों से विश्राम मिले, तब-तब कुछ सेकंड के लिए ही सही पर अपने मूलस्वरूप स्थिति में बैठने का अभ्यास करें। अपने उस अवस्था में स्थित रहने का अभ्यास करें। जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप का अभ्यास करते जाओगे, उतना-उतना आपको आपके संस्कारों में परिवर्तन मिलता जाएगा। परिवर्तन के लिए अभ्यास करना जरूरी है।

सबसे पहले सभी के पास अपनी परिवर्तन की लिस्ट होनी चाहिए कि आपको आपके अंदर क्या-क्या परिवर्तन करना है। जब आपके पास आपके परिवर्तन की लिस्ट तैयार होगी, तो आपको आपके एक-एक बात के ऊपर चेकिंग करनी होगी। आपको चेक करना होगा कि यह बात आप आत्मा को परिवर्तन करनी है, तो अभी उसके परिवर्तन के लिए मैं आत्मा क्या प्रयास करूं? परिवर्तन एक प्रोसेस है। सबसे पहले आपको आपके अंदर खोजना होगा कि आपको कहां पर आपके अंदर परिवर्तन चाहिए। और यह परिवर्तन तब ही मिलेगा जब आपकी संपूर्ण सच्ची दिल होगी। अगर सच में आपकी दिल है कि आपके शरीर के अंदर कोई बीमारी है और आप चाहते हो उस बीमारी से आप संपूर्ण रूप से

मुक्त हो जाएं, तो आपका प्रयास उसको ठीक करने के पीछे लगेगा। उस बीमारी को जड़ से निकालने के पीछे आप अलग-अलग दवाइयों का इस्तेमाल करोगे, आप अलग-अलग थेरेपी ढूंढकर निकालोगे। फिर आप देखोगे कौन सी दवाई से कितना असर हो रहा है। तो अभी कौन सी ट्रीटमेंट हमें शरीर को सूट हो रही है जो वह बीमारी को पूर्ण रूप से शरीर से बाहर करने में मददगार बन रही है। जब आपको अभ्यास करने के बाद पता चलता है कि यह दवाई, यह थेरेपी आपके शरीर को सूट कर रही है, तो फिर आप उसे जब तक वो बीमारी पूर्ण रूप से मुक्त नहीं होती या जब तक आपका शरीर स्वस्थ रूप से कार्यरत में नहीं आता, तब तक आप उस दवाई का आधार लेते हो आपके शरीर को ठीक करने में। पर यह कब हुआ? जब आपने दिल से चाहा कि उस बीमारी से आपका शरीर स्वस्थ हो जाए। जब आपका दिल का संकल्प उठा, तो आपकी सारी ऊर्जा उस बीमारी को मुक्त करने के पीछे, आपके शरीर को स्वस्थ करने के पीछे लग जाती है। पर क्या सच में आप चाहते हो कि आत्मा को जो-जो बीमारी हुई है, क्या सच में आप उसे मुक्त करना चाहते हो या सिर्फ आप ऊपर-ऊपर से चाहते हो कि यह बीमारी मुक्त हो जाए, यह हम आत्मा के अंदर का इस प्रकार का संस्कार परिवर्तित हो जाए? क्या सच में आप यह चाहते हो? आपको आपके एकांत में बैठकर आपकी चेकिंग करनी होगी। जब तक आप अकेले एकांत में नहीं बैठोगे, तब तक आपकी बीमारी, आपका परिवर्तन नहीं हो पाएगा। भल आपने रुह-रिहान में, निराकार में भी आपकी बातें सुनाई, फिर भी परिवर्तन आप ही को करना होगा। परमात्मा को भी सुनाने से परिवर्तन नहीं होगा। सुनाने से सच्ची दिल बढ़ती जाती है, पर परिवर्तन खुद से करना होता है। परिवर्तन के लिए सच्ची दिल का होना जरूरी है। अगर कोई चाहता है कि उनको लौकिक रूप से कुछ बड़ा आदमी बनना है और वो सिर्फ यह सोचता ही रहे पर उस दिशा में कोई अपने कदम ही ना उठाए, उस दिशा में कोई मेहनत ही ना करे, तो सिर्फ सोचने से और लगने से क्या होगा? आपको सच में आपके अंदर कोई भी प्रकार का परिवर्तन चाहिए, तो सबसे पहले आपको आपसे सच्ची दिल से आपकी चेकिंग करनी होगी। क्योंकि सामने वाला कितना भी आपको समझाए कि आप ऐसे नहीं करो, आप ऐसे करो, आप ऐसी बातें नहीं करो, आप ऐसा व्यवहार नहीं करो, आप

आपका ध्यान रखा करो, आप यह चिंताएं छोड़ दो — सामने वाला कोई कितना भी आपको आपके अंदर की बातें बोलकर भी दिखाए, फिर भी जब तक आपको सच्ची दिल से नहीं लगता, तब तक वह बातें आपसे नहीं मुक्त हो सकती। आपको सच्ची दिल से सबसे पहले यह चेक करना होगा कि क्या मैं आत्मा चाहती हूँ कि यह हमसे इस प्रकार से व्यवहार में, इस प्रकार से कर्मों में या बोल में इस प्रकार से हमसे बातें नहीं होनी चाहिए, हमारा व्यवहार इस प्रकार से नहीं होना चाहिए। जब तक आपको यह संपूर्ण रूप से रियलाइज नहीं होगा, तब तक आपको संगमयुग अंत भी हो जाए, अंतिम का लास्ट दिन भी आ जाए, उस लास्ट दिन में भी कोई भी आपको कहे यह आपके अंदर नहीं होना चाहिए, फिर भी आप परिवर्तित नहीं हो पाओगे, क्योंकि आपको ही वह गुण अच्छा लगता है, आपको ही आपका वह स्वभाव-संस्कार अच्छा लगता है। आपने कभी आपकी चेकिंग नहीं की है कि आपके कौन से कर्मों से सामने वाला दुखी होता है या सामने वाला डिस्टर्ब हो जाता है। जब आप यह चेकिंग कर पाओगे, तब आपको आपका अंदर का रियल पिक्चर समझ में आएगा। जब तक आप आपके नजरिए से चलोगे, तब तक आपके अंदर किसी भी प्रकार का कभी भी कोई भी परिवर्तन नहीं दिखेगा। सामने वाले का नजरिया आपके व्यवहार के लिए या आपके स्वभाव-संस्कार के लिए कैसा है, यह जब तक आपको रियलाइज नहीं होता, तब तक आपको यही लगेगा कि मैं तो सही हूँ, मैं सही से चल रही हूँ, मुझे तो सब समझ में आता है, मुझे किसी से सीखने की जरूरत नहीं है — यह अहंकार है। अगर सच में आप चाहते हो आपको संगमयुग में आपके अंदर के सभी प्रकार के सारे विपरीत अवगुणों का त्याग करना है, उनसे आपको मुक्त होना है, तो आपको आपका स्वभाव-संस्कार, आपके कर्म-बोल सामने वाले से वेरीफाई करना होगा। आप ऐसे ही सामने वाले को ग्रांटेड नहीं ले सकते हैं — “उनको तो क्या समझ में आता है, मुझे पता है मेरी परिस्थिति क्या है, मुझे पता है मैं कौन से सिचुएशन में हूँ, तो इसमें यह होना स्वाभाविक है, सामने वाले को क्या पता मैं कौनसी सिचुएशन से गुजर रही हूँ।” यह हुआ आपका आपको कारण देना। आपकी परिस्थिति कुछ भी हो, आप कोई भी सिचुएशन से गुजर रहे हो, पर आपसे अगर किसी को कष्ट हो रहा है, दुख पहुंच रहा है, तो आपको आपके व्यवहार में परिवर्तन

करना होगा। जब तक आप आपके व्यवहार को दूसरों के नजरिए से नहीं देखोगे, तब तक आप आपको परिवर्तित कदापि नहीं कर पाओगे। परिवर्तन के लिए सामने वाला जो भी आपके संबंध-संपर्क में आते हैं, आपके घर-परिवार वाले हों या जिनके साथ भी आप संगठन में चलते हो, वह हर एक सामने वाला एक आईना है। तो अगर आप दिल से आपका परिवर्तन चाहते हो, तो सदैव सामने वाले के नजरिए से अपने कर्मों को, व्यवहार को, बोल को चेक करना। यह हुआ एक प्रोसेस से परिवर्तन की विधि।

दूसरी परिवर्तन की विधि है कि हमेशा आप आपको जो आपका बोल-कर्म है, जो कर्मेंद्रियों द्वारा घटित होते हैं, जिससे दूसरों को दुख मिलता है, बस उस परिस्थिति में, उस सिचुएशन में आप आपकी जगह सामने वाले को देखो, जो परमात्मा ने शिक्षा दी है — आप आपका कर्म “रिप्लेस द प्लेस” इससे वेरीफाई करो। फिर आपको महसूस होगा कि आपको कैसे लग रहा है। हर बार, हर सिचुएशन में बस इस फॉर्मूला को अप्लाई करते जाओ — “रिप्लेस द प्लेस”। जिसके प्रति आप कुछ बुरा सोच रहे हो, करने जा रहे हो या बोलने जा रहे हो, उससे पहले उसकी जगह को आप लो और आप देखो वह सामने वाला आपके साथ उस ही प्रकार से गलत बोल या गलत आपके प्रति सोच या आपके प्रति गलत कर्म करने जा रहा है, फिर चेक करना आपको कैसे लग रहा है।

परिवर्तन के यह दो बड़े फॉर्मूले हैं — एक है हर बार “रिप्लेस द प्लेस”, आपके हर एक कर्म को लेकर चेक करना; और दूसरा, हर बार आपका हर व्यवहार दूसरों के नजरिए से चेक करना। दोनों भी फॉर्मूले दिखने को लगभग सेम लगेंगे, पर इनमें थोड़ा अंतर है। आपको जो भी विधि सहज लगे, उस विधि को अपनाकर अपने हर एक स्वभाव-संस्कार को उस फॉर्मूले में रखकर चेक करते जाना, फिर आपको आपके सामने उत्तर आता जाएगा, फिर आप आपके अंदर वो परिवर्तन कर पाओगे।

पर यह सब करने से पहले फिर से अपने आप को अवश्य पूछना कि क्या मुझ आत्मा को सच्ची दिल से अपने अंदर परिवर्तन करना है? क्या सच्ची दिल से मैं आत्मा जहां-जहां पर अटकी हूँ — फिर मेरे मन में चलने वाले जो भी विचार हों, मेरा जिस प्रकार का स्वभाव-संस्कार है, जिसमें हम अटके हैं, जो परिवर्तित नहीं हो पा रहा है — चेक करें ऐसा कौन सा संस्कार बना हुआ है जिससे आप

मुक्त नहीं हो पा रहे हो। यह सब चेक करके चेक करना कि क्या सच में आप इनसे मुक्त होना चाहते हो या आपको अभी भी आपकी लाइफ जैसे चल रही है उसी में आपको मौज और आनंद आ रहा है? हर कोई अपनी चेकिंग अवश्य करे।

जब तक आपको दिल से नहीं लगता कि यह अवगुण आपके अंदर नहीं होना चाहिए, तब तक वह नहीं निकलेगा और आपका मायावी स्वरूप यही आपको समझानी देगा — “कोई बात नहीं, परिस्थिति ही ऐसी थी, ऐसे तो होना ही था। कोई बात नहीं, अगली बार देखते हैं, ध्यान रखते हैं। कोई बड़ी बात नहीं, इतना ही तो हुआ है। इससे इतना तो किसी को कष्ट तो नहीं मिला, कोई बड़ी बात नहीं।” आपके मायावी स्वरूप से आप सदैव बचना, आप आत्मा। कभी भी आपसे घटित होने वाली कोई भी गलती को छोटा नहीं समझना। आपसे होने वाली गलती को छोटा समझने की गलती आपका मायावी स्वरूप करता है जो आपको मन में विचार देते रहता है — “कोई बड़ी बात नहीं है, कोई हर्जा नहीं है। कोई बात नहीं, यह हम निमित्त को बता देंगे। कोई बात नहीं, इतना हुआ हम परिवार में बता देंगे।” जब तक आपको दिल से रियलाइज नहीं होता यह गलती नहीं होनी चाहिए थी, तब तक उस गलती की ऊर्जा आपके अंदर से कभी भी मुक्त नहीं हो सकती। कोई भी गलती होने के बाद आप भल क्षमा मांगो, सॉरी कहो, माफी मांगो, पर वह करने के बाद आपको क्या सच में यह रियलाइज हुआ कि यह हमसे नहीं होना चाहिए था? जब तक यह रियलाइज नहीं होता — भल आज के दिन में किसी से कोई गलती हुई और रियलाइज करने में उसको एक मास लगा, जिस दिन उसको दिल से रियलाइज हुआ, उस दिन उसके अंदर उस गलती की ऊर्जा निकल गयी। इसलिए गलती होने पर रियलाइज करना बहुत जरूरी है। सिर्फ सॉरी कहने से और उस बात को छोड़ने से वो गलती की ऊर्जा पूर्ण रूप से मुक्त नहीं होती।

इसमें भी यही बात है कि क्या सच में दिल से आपको लगा कि यह हमसे गलती हुई? सभी चेक करना। अगर आपको दिल से नहीं लगता, माना आपका मायावी अस्तित्व कड़ा है। वह आपको झूठी तसल्ली देता है — “कोई बात नहीं, ये तो पिछली बार भी किसी से हुआ था, कोई हर्जा नहीं,

इसमें कोई बड़ा नुकसान नहीं।” आप नहीं जानते, अगर आपने आपके अंदर की गलती की ऊर्जा को मुक्त नहीं किया, तो आपसे हर कर्मों में, हर बातों में छोटी या बड़ी गलतियां होती ही रहेंगी। आपको समझ में नहीं आएगा यह आपसे क्यों हो रहा है, क्योंकि सच्ची दिल से आपने आपके अंदर की गलती को रियलाइज नहीं किया। किसी को सच्ची दिल से कोई अवगुण मुक्त करना है, कोई बीमारी को शरीर से मुक्त करना है, सबसे पहले वह सच्ची दिल से रियलाइज करे कि यह नहीं चाहिए, जो अवगुण मुझ आत्मा को भी दुख दे रहा है और संबंध-संपर्क वालों को भी दुख दे रहा है, यह नहीं चाहिए। जब तक आपको सच्ची दिल से आपके हर कर्म के लिए, आपके हर बोल के लिए रियलाइज नहीं होगा, तब तक आपके बोल में, कर्म में, स्वभाव-संस्कारों में कभी भी परिवर्तन नहीं होगा, अंश मात्र भी परिवर्तन नहीं होगा। और अगर आपने सिर्फ आपका स्वभाव ऊपर-ऊपर से ठीक किया, फिर भी वह लंबे समय तक नहीं चल पाएगा, क्योंकि आपने उसके विपरीत मुख्य ऊर्जा को ही मुक्त नहीं किया। आपने आपके अंदर जिस, जो मुख्य विपरीत ऊर्जा है, उसको मुक्त किए बिना आपने ऊपर-ऊपर से कोई गुण की धारणा करने की चेष्टा की। इसलिए सभी चेक करें कि अगर आपके अंदर लंबे समय से कोई एक स्वभाव-संस्कार में परिवर्तन नहीं आ रहा है, तो आप चेक करना जरूर आपने कहीं उसे संपूर्ण रूप से रियलाइज नहीं किया है। आप भले सामने वाले को रो-धोकर भी बताओ कि “नहीं, हमने रियलाइज किया है। हम तो नहीं चाहते, हम तो सच में किसी को दुख देना नहीं चाहते, पर हमसे हो जाता है” — यह आपका मायावी स्वरूप है जो आपसे ही ठगी कर रहा है और सामने वाले से भी ठगी कर रहा है। सावधान हो जाना आपके मायावी अस्तित्व से। आपके अंदर परिवर्तन नहीं दिख रहा है किसी प्रकार के स्वभाव-संस्कार में, तो समझ जाना आपको दिल से नहीं लगता है, ना ही आपने दिल से उसे रियलाइज किया है, ना ही आपने आपके उस स्वभाव-संस्कार को सामने वाले के नजरिए से चेक किया है।

बहुत आसान विधि है परिवर्तन की, पर कोई इसे समझे। हर कोई, हर कोई अस्तित्व अपने शरीर की हर प्रकार की बीमारी से मुक्त हो सकता है, यह अटल सत्य है। पर आप दिल से चाहो कि

आप इससे मुक्त हो जाओ। आपकी दिल से चाहना माना आप आत्मा की ऊर्जा उसको ठीक करने में पूर्ण रूप से लग जाना और उस ऊर्जा से वह बात पूर्ण रूप से ठीक हो जाना, जिसको दुनियावी भाषा में “विल पावर” कहते हैं — “इफ़ देयर इज़ विल, देयर इज़ वे”। इसका अर्थ क्या है? कौन सी विल होनी चाहिए, फिर कौन सा वे मिलेगा? सच्ची दिल होगी, तो ही आपको रास्ता मिलेगा। रास्ता वही है — सच्ची दिल से आप आत्मा की ऊर्जा उस एक दिशा में लग जाएगी आपके परिवर्तन के लिए, फिर वह परिवर्तन आपके मन-बुद्धि-संस्कार का हो, आपके बोल का हो, आपके व्यवहार का हो या आपके शरीर के लिए हो। अगर आप यह भी चाहते हो आपका शरीर आपको सदा साथ दे तपस्या के लिए, सेवा के लिए, पर आपको चेक करना है कि क्या आपकी सच में दिल है कि आपको आपका शरीर संपूर्ण रूप से स्वस्थ चाहिए या अब तक जैसे चल रहे हैं ठीक है, कोई बात नहीं, सब ठीक से तो हो ही रहा है, चलेगा ऐसा ही चलता रहा तो। आपका शरीर भी आपके सच्ची दिल से ठीक होगा। हर एक बात सच्ची दिल से परिवर्तन होती ही होती है। इसलिए अगर आपके शरीर से कोई बीमारी मुक्त नहीं हो रही है, चेक करना — यह बहुत, बहुत माना बहुत सटल है — कहीं तो आप नहीं चाहते, कहीं तो आपको जो है वह ठीक लग रहा है। जब तक आपका दिल का संकल्प नहीं उठेगा “यह ठीक नहीं है, मुझे इसे ठीक करना ही है किसी भी हालत में”, जब किसी का दिल का दृढ़ संकल्प उठेगा, देखना उस आत्मा की ऊर्जा उसका वह शरीर ठीक करने में लगेगी, उसको जो भी उसके अंदर के अवगुणों को मुक्त करना है, स्वभाव-संस्कारों को परिवर्तन करना है, उसके पीछे लगने में, उसको ठीक करने में लगेगी।

दृढ़ता की शक्ति सच्ची दिल से आती है। इसलिए सच्ची दिल से हर कोई अपनी हर बात को, हर कर्म को सदैव चेक करना। सच्ची दिल से चेक कर सकोगे, तो आपके अंदर परिवर्तन निश्चित रूप से दिखेगा ही दिखेगा। सच्ची दिल से कोई संकल्प उठाए “मुझ आत्मा को परमात्मा के पास, परमात्मा के यज्ञ में समर्पित होना ही है”, सच्ची दिल का यह संकल्प उसके समर्पण के सारे रास्ते खोल देगा। ऐसे ही लौकिक में वह कहावत नहीं है — “शिद्धत से कोई भी चीज़ को आप हासिल करना चाहो, तो

पूरी कायनात आपको उसे हासिल करने के पीछे लग जाएगी।” कोई भी कहां पर भी हो, किसी भी सिचुएशन में हो, पर वो अगर अपनी परिस्थिति को, अपनी स्थिति को परिवर्तित करना चाहेगा, तो उसको उसके सारे रास्ते खुलते जाएंगे। कायनात किसको मदद करती है, माना यूनिवर्स किसको मदद करता है? जिसकी दिल सच्ची है। यूनिवर्स में अनंत शक्तियां हैं, यूनिवर्स खुद भी एक शक्ति है। वो देखते हैं किसकी दिल अपने परिवर्तन के लिए सच्ची है, किसकी दिल अपने कल्याण के लिए सच्ची है। यूनिवर्स की शक्तियां और यूनिवर्स स्वयं उस अस्तित्व को मदद करने में संपूर्ण रूप से सहयोग देता है। यह परमात्मा की ऑटो सिस्टम है। इसलिए इस ऑटो सिस्टम का पासवर्ड है “सच्ची दिल”। आपके परिवर्तन का आधार है सच्ची दिल से आपको आपके हर बात का, हर कर्मों का रियलाइज करना ही होगा, फिर आपको मदद मिलती जाएगी। परमात्मा के पास भी अगर किसी को पहुंचना है, तो भी वो सच्ची दिल से अपना संकल्प रखे, देखना उसके रास्ते कैसे-कैसे, किस प्रकार से खुलते जाएंगे। पर आत्माओं को अगर संसार में रुचि है, अपने परिवर्तन और कल्याण में नहीं है, तो सिर्फ परमात्मा के पास पहुंचने की चाहना रखकर कुछ नहीं होगा। इसलिए सच्ची दिल से रियलाइज करना — क्या सच में आपको परिवर्तन होना है, क्या सच में परमात्मा के पास आप आत्मा को पहुंचना है, क्या सच में आप आत्मा आपका संपूर्ण कल्याण करना चाहती हो, क्या आप आत्मा आपका संपूर्ण परिवर्तन करना चाहती हो, क्या सच में आपको आपके अंदर गलतियां दिखती हैं, क्या सच में आपको आपके अंदर के हर प्रकार के विपरीत गुणों की ऊर्जा को मुक्त करना चाहते हो, क्या सच में हर प्रकार की गलती की ऊर्जा आप आपसे मुक्त करना चाहते हो, क्या सच में आप चाहते हो सेवा के लिए आपका शरीर स्वस्थ रहे, तपस्या के लिए आपका शरीर स्वस्थ रहे?

आज के दिन में यह सभी बातें सभी चेक करना, यह आज का होमवर्क है। यह होमवर्क भी जो कोई दिल से करेगा, उसको परमात्मा की ताकत परिवर्तन के लिए मिलती जाएगी।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः